Toppersnotes®
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ

वन रक्षक

छत्तीसगढ वन विभाग

भाग – 2

छत्तीसगढ़ का सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

CHHATTISHGARH FOREST GUARD

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	छत्तीसगढ़ का भूगोल	
1.	छत्तीसगढ़ की भौतिक विषेषताएँ	1
2.	छत्तीसगढ़ की मृदा	4
3.	छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियाँ	7
4.	छत्तीसगढ़ में वन संपदा	11
5.	छत्तीसगढ़ की जनसांख्यिकी	19
6.	कृषि	29
7.	पशुधन विकास	43
8.	छत्तीसगढ़ में सिंचाई परियोजनाएँ	55
9.	खनिज संसाधन	57
10.	ऊर्जा संसाधन छत्तीसगढ़	61
11.	छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन स्थल	65
12.	परिवहन	70
13.	छत्तीसगढ़ की प्रमुख सरकारी योजना	73
14.	उद्योग	84
	छत्तीसगढ़ का इतिहास	
1.	छत्तीसगढ़ का प्राचीन इतिहास	94
2.	मध्यकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास	106
3.	बस्तर का इतिहास	109
4.	आधुनिकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास	114
5.	छत्तीसगढ़ जनजातीय विद्रोह	123
6.	छत्तीसगढ़ में मजदूर आन्दोलन	126
7.	छत्तीसगढ़ का जंगल सत्याग्रह	130
8.	छत्तीसगढ़ के 36 गढ़ और रियासतें	134

छत्तीसगढ़ का सामाजिक पहलू		
1.	आदिवासी सामाजिक संगठन	137
2.	जनजातीय विकास	143
3.	संवैधानिक प्रावधान	146
4.	छत्तीसगढ़ जनजाति	149
5.	जनजातीय समस्याएँ	160
6.	छत्तीसगढ़ के कला रूप	165
7.	छत्तीसगढ़ की भाषाएँ, साहित्य	168
8.	लोकगीत, लोक कथाएँ और लोक महापुरूष	174
9.	साहित्यिक, संगीत और कला संस्थान	180
10.	छत्तीसगढ़ के पुरुस्कार	182
11.	मेलें और त्योहार	184
12.	पुरातत्व एवं पर्यटन स्थल	189
13.	बस्तर के झरने और गुफाएँ	197
14.	छत्तीसगढ़ अर्थव्यवस्था	202
15.	छत्तीसगढ़ **G-20**	219
16.	छत्तीसगढ़ में प्रथागत विभिन्न कानून और अधिनियम	223

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

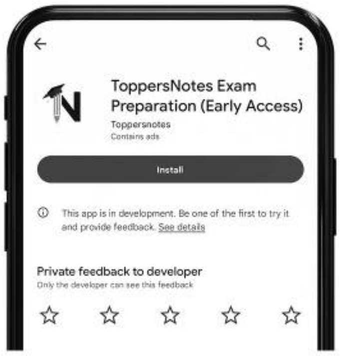

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।

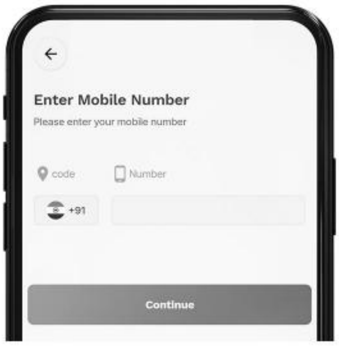

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें।

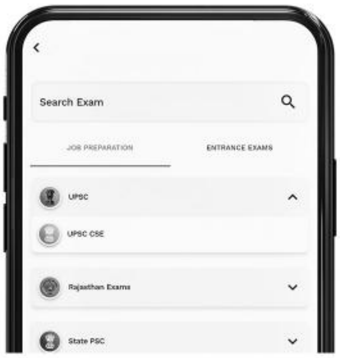

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें।

सर्च बटन पर क्लिक करें।

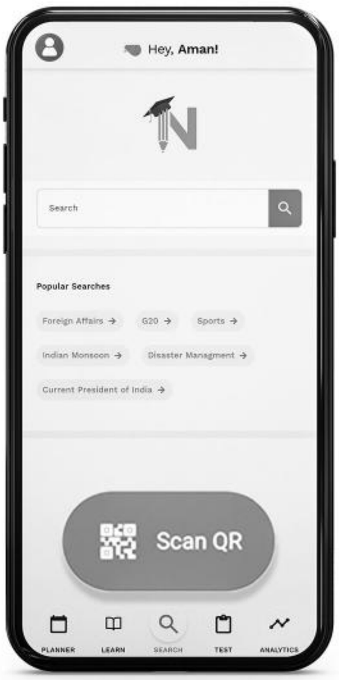

SCAN QR पर क्लिक करें।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें।

छत्तीसगढ की भौतिक fo'k"krk,¡

छत्तीसगढ देश का नवगणित 26 वाँ राज्य है जो नवम्बर, 2000 को अस्तित्व में आया। जनगणना 2001 के समय राज्य में जिलों की संख्या 16 थी, जो 2007 में बढकर 18 हो गयी। वर्तमान में जिलों 27 हो गई है।

स्थिति एवं विस्तार – छत्तीसगढ एशिया महाद्वीप एशिया महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में भारत के उत्तरी प्रायद्वीप में अवस्थित है। छत्तीसगढ की भौगोलिक अवस्थित 17°46 से 24°5 उत्तरी अक्षांष के मध्य तथा 80°15 से 84°20 अन्य स्त्रोत में 84°24 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यहाँ से होकर कर्क रेखाउत्तरी अक्षांश तथा भारतीय मानक समय पूर्वी देशांतर रेखाएँ गुजरती है, जो कि सूरजपुर (अन्य स्त्रोत में कोरिया) जिले में एक–दूसरे को काटती है।

छत्तीसगढ का कुल क्षेत्रफल लगभग 1,35,192 वर्ग किमी है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 4.11% है। राज्य के उत्तर से दक्षिण तक लंम्बाई 700 किमी तथा पश्चिम से पूर्व की लंबाई 435 किमी है। छत्तीसगढ के उत्तर–पश्चिम में मध्यप्रदेश, दक्षिण पश्चिम में महाराष्ट्र, दक्षिण में तेलगांना तथा आंध्र प्रदेश, पूर्व में ओडिशा, उत्तर–पूर्व में झारखंड तथा उत्तर में उत्तर प्रदेश स्थित है।

अंक्षाशीय स्थिति

17°46 उत्तरी अक्षांष से 24°5 उत्तरी अक्षांश के मध्य

- अक्षांशीय लंबाई अर्थात् उत्तर–दक्षिण की लंबाई 700किमी।
- 23° उत्तरी अक्षांष (कर्क रेखा) राज्य के उत्तरी जिलों–कोरिया, सूरजपुर और बलरामपुर से गुजरती है।

देशांतरीय स्थिति

80°15 पूर्वी देषांतर से 84°20ष पूर्वी देषांतर के मध्य–

- देषांतरीय लंबाई अर्थात् पूर्व–पश्चिम लंबाई 435 किमी।
- 82°पूर्वी देशांतर अर्थात् भारतीय मानक समय रेखा छत्तीसगढ के 7 जिलों से गुजरती है। (सूरजपुर, कोरिया, कोरबा, जांजगीर–चांपा, बलौदा बाजार, महासमुद, गरियाबंद)

छत्तीसगढ की अवस्थिति एवं विस्तार का प्रभाव

- छत्तीसगढ एक भू–आवेश्ठित राज्य है, जिसका किसी भी देष के साथ सीमा नहीं लगती है । यह बाह्य आक्रमण से सुरक्षित प्रदेश है।
- भारत का मानक समय रेखा राज्य के 7 जिलों से होकर गुजरती है। छत्तीसगढ में भारत के मानक समय रेखा और जलवायविक समय में कोई अंतर नहीं है ।
- छत्तीसगढ के तीन हिस्सों से कर्क रेखा गुजरती है इसलिये यहाँ की जलवायु उश्णकटिबंधीय है ।

पाट प्रदेश

यह राज्य के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में स्थित है पाट पठारी स्थलाकृतियों में स्थित एक ऊँचा मैदान है। पाट अपने शीर्ष में सपाट और पार्ष्व में सदृश्य तीव्र ढालदार होता है। इसका विस्तार अम्बिकापुर, सीतापुर तथा लुण्ड्रा तहसील तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 6204वर्ग किमी है, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 4.59 प्रतिशत है। यहाँ मुख्य रूप से लाल–पीली मिट्टी तथा लाल दोमट मिट्टी पाई जाती है जिसमें धान, गेहूँ, चना, तुवर, सरसों इत्यादि फसलों का उत्पादन होता है। यहाँ की जलवायु षुश्क एवं पर्णपाती है। बॉक्साइट इस क्षेत्र का प्रमुख खनिज है। इसके उपविभाग निम्न है।

1. **मैनपाट**:– यह दक्षिणी सीतापुर एवं दक्षिणी सरगुजा तक विस्तृत है । इस क्षेत्र से मांड नदी का उद्गम हुआ है। इस क्षेत्र को छत्तीसगढ का षिमला, तिब्बतियों का शरणार्थी स्थल एवं ठंडा प्रदेश कहा जाता है।
2. **जारंगपाटः**– यह उत्तरी सीतापुर और पूर्वी सरगुजा तहसील तक विस्तृत है।
3. **सामरीपाट**:– इसका विस्तार पूर्वी सरगुजा, सामरी (कुसमी) तहसील तक है। गौरलाटा राज्य की सबसे ऊँची चोटी वहीं स्थित है । जिसकी ऊँचाई 1225मीटर है। यह प्रदेश का सबसे ऊँचा पाट प्रदेश भी है।
4. **जमीरपाटः**– यह बलरामपुर जिलें में स्थित है। इसे बॉक्साइट का मैदान भी कहा जाता है।
5. **लहसुन पाट**:– यह भी बलरामपुर जिला में स्थित है। यह सामरीपाट का पश्चिम भाग है।
6. **जशपुर पाट**:– यह जषपुर जिले में स्थित है जो राज्य का सबसे बडा व लंबा पाट प्रदेश है।
7. **पेण्ड्रापाटः–** जषपुर जिले में स्थित है। यहाँ से ईब, व कन्हार नदी का उद्गम होता है।
8. **जशपुरः–** सामरी पाट या कुसमी पाट – जशपुर–सामरी पाट प्रदेश की उत्तरी सीमा जिसमें संपूर्ण (कुसुमी) तहसील तथा जषपुर तहसील सम्मिलित है । यहाँ की जलवायु ऊष्णकटिबंधीय है।

यह क्षेत्र छोटा नागपुर पठार का हिस्सा है। यहाँ से तीन नदियाँ (ईब, शंख, कन्हार) का बहाव होता है। मांद नदी का उद्गम मैनपाट से हुआ है। जिसका बहाव उत्तर से दक्षिण तथा ईब नदी का उद्गम पेण्ड्रापाट से हुआ है। इसका बहाव दक्षिण से पूर्व की ओर है। इन नदियों के बहाव के कारण यह क्षेत्र अधिक उपजाऊ है इस क्षेत्र में शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते है जो पाट प्रदेश के 38% भाग में है। यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मैनपाट को 'छत्तीसगढ का शिमला' कहा जाता है। छत्तीसगढ ने इन चार भागों से जाना जा सकता है कि स्थलाकृति, वनस्पति, फसल, खनिज इत्यादि से राज्य का स्थान देश से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

राष्ट्रीय उद्यान

गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान

यह राज्य का सबसे बडा राष्ट्रीय उद्यान है। इसकी स्थापना 1981 में की गई थी। इसका पुराना नाम संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान था, परंतु राज्य गठन के बाद इसका नाम 'गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान' कर दिया गया। इसे 2014 ई. में टाइगर रिजर्व बना दिया गया। यह कोरिया तथा सूरजपुर जिले में अव्यवस्थित है। यहाँ नीलगाय, बाघ, तेदुंआ आदि पाये जाते है।

अतिमहत्वपूर्ण जानकारी

छत्तीसगढ राज्य वन संसाधन की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य है। राज्य में 55621वर्ग किलोमीटर 44.21% वन है। भारत में छत्तीसगढ का स्थान तीसरा है।

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान

इस राष्ट्रीय उद्यान से इंद्रावती नदी बहती है। जिस वजह से इसका नाम पडा है। इसकी स्थापना 1978 ई. में हुई थी। यह बीजापुर जिले में स्थित है। यह राज्य का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है इसका क्षेत्रफल 1258 वर्ग किमी है। इसे वर्ष 1983 में टाइगर रिजर्व घोशित किया गया था। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2009 में यहाँ टाइगर रिजर्व लागू किया गया जिसके बाद इसका क्षेत्रफल 2799 वर्ग किमी तक फैलाया गया।

अन्य जानकारियाँ

- छत्तीसगढ वन क्षेत्र की दृश्टि से देश में चौथा तथा वन आवरण की दृश्टि से तीसरा स्थान है।
- ISER 2017के अनुसार छत्तीसगढ क्षेत्रफल की दृश्टि से तीसरा सर्वधिक वनाच्छादित राज्य है।

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान

यह राज्य का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान है। यह 200 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसकी स्थापना वर्ष 1982 में हुई थी। कांगेर नदी की वजह से इस उद्यान का नाम पडा है। यहाँ पहाडी मैना को संरक्षित किया गया है। कांगेर नदी में भैसादरहा नामक स्थान पर मगरमच्छ प्राकृतिक निवास है।

अन्य जानकारियाँ

यहाँ उष्णकटिबंधीय षुश्क पर्णपाती वन पाये जाते है । राज्य में कुल 3 राष्ट्रीय उद्यान है तथा 11 अभ्यारण्य है। राज्य में कुल 4 टाइगर रिजर्व भी है। सन् 2017 में भोरमदेव को देष का 51 वाँ राज्य टाइगर रिजर्व बनाये जाने का प्रस्ताव दिया गया था परन्तु अप्रैल 2018 में राज्य सरकार अपने फैसले से पीछे हट गई। राज्य में सर्वाधिक वन नारायणपुर जिला तथा न्यूनतम वन बेमेतरा व दुर्ग में है।

अभ्यारण्य

प्रदेश में 11 अभ्यारण्य है।

1.	तमोर पिंगला	सूरजपुर	1978	608 वर्ग किमी
2.	सीतानदी	धमतरी	1974	559 वर्ग किमी
3.	अचानकमार	मुंगेली	1975	552 वर्ग किमी
4.	सेमरसोत	बलरामपुर	1978	430 वर्ग किमी
5.	गोमरदा (गोमडी)	रायगढ	1975	278 वर्ग किमी
6.	पामेड	बीजापुर	1983	265 वर्ग किमी
7.	बारनवापारा	बलौदाबाजार	1976	245 वर्ग किमी
8.	उदंती	गरियाबंद	1983	230 वर्ग किमी

9.	भोरमदेव	कवर्धा	2001	164 वर्ग किमी
10.	भैरमगढ	बीजपुर	1983	139 वर्ग किमी
11.	बादलवखोल	जषपुर	1975	105 वर्ग किमी

नोटः – उदंती – सीतानदी, तमोर पिंगला (गुरूघासीदास के साथ) वर्ष 2009 सेटाइगर रिजर्व बना दिया गया है। इस वजह से वर्तमान अभ्यारण्य की संख्या 8 है।

टाइगर रिजर्व

वर्तमान में प्रदेश में 4 टाइगर रिजर्व है। सन् 2009 में तीन टाइगर रिजर्व को मान्यता मिली।

- इंद्रावती, यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 1983से शुरू हुआ था।
- उदंती – सीतानदी, यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 2006 में हुआ था।
- अचानकमार, यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 2006में शुरू हुआ था।
- गरूघासीदास राज्य का नवीनतम तथा चौथा टाइगर रिजर्व है।
- गुरूघासीदास को तमोर पिंगला को मिला कर वर्ष 2014 में बनाया गया है।

बायोस्फीयर

राज्य में सिर्फ एक बायोस्फीयर है– अचानकमार, इसकी स्थापना वर्ष 2005 में की गई थी । यह देश का 14वाँ बायोस्फीयर है। इससे पहले 1985 में कांगेर घाटी को बायोस्फीयर बनाने की घोशणा की गई थी, लेकिन स्थापित ना हो सका ।

NÙkhlx< dh enk

छत्तीसगढ में मिट्टी के प्रकार

लाल पीली मिट्टी (मटासी मिट्टी)

- विस्तार – सम्पूर्ण छत्तीसगढ
- निर्माण – गोंडवाना क्रम की चट्टानों के अपरदन से
- रंग – लाल (लोहे के ऑक्साइड के कारण), पीला (फेरिक ऑक्साइड के जल योजना)
- कमी –ह्यूमस, नाइट्रोजन
- pH मान –5०5 से 8०5 अम्लीय से क्षारीय
- फसल – उपयुक्त – चावल के लिए, अन्य – ज्वार, मक्का, तिल, अलसी, कोदो, कुटकी
- स्थानीय नाम – मटासी
- प्रतिशत –50 से 60%, जल धारण क्षमता कम होती है।

लाल रेतीली मिट्टी (बलुई मिट्टी)

- विस्तार – बस्तर संभाग
- राजनांद गांव (मोहला तहसील)
- कांकेर
- नारायणपुर
- बीजापुर
- कोंडा गाँव
- बस्तर
- दंतेवाडा

- सुकमा
- निर्माण – ग्रेनाइट व नीस चट्टानों के अपरदन से इसका निर्माण होता है ।
- कमी – नाइट्रोजन और ह्यूमस की कमी होती है ।
- अधिकता – लौह तत्व की अधिकता होती है।
- उपजाऊ– उर्वरकता की कमी होती है।
- फसल – उपयुक्त – कोदो, कुटकी
- अन्य – ज्वार, बाजरा, आलू, तिल
- विशेष –1प्रतिशत 30.30% यह अम्लीय प्रकृति की होती है।

लैटेराईट मिट्टी (मुरमी या भाठा)

- निर्माण– निक्षालन की प्रक्रिया से होता है।
- प्रधानता – लोहा, एल्युमिनियम के ऑक्साइड की अधिकता होती है।
- कमी – ह्यूमस, नाइट्रोजन पोटास, चूना
- उपयोग – सडक व भवन निर्माण में होता है।
- फसल – सिंचाई होने पर मोटे अनाज
- उर्वरकता – कम होती है।
- विस्तार – सरगुजा, जशपुर, तिल्दा (रायपुर), बेमेतरा
- pH मान –7 से अधिक है ये क्षारीय होती है।

काली मिट्टी (कन्हार मिट्टी)

- अन्य नाम – भर्री, कन्हार
- निर्माण – बेसाल्ट (दक्कन ट्रेप) के अपरदन से बनता है।
- विस्तार – मुंगेली, पंडरिया, राजनांद गाँव
- रंग – काला टिटेनिफेरस मैग्नेटाइट और जैव तत्व की उपस्थिति के कारण होता है।
- प्रधानता – लोहा, चूना, पोटास, एल्युमिनियम, कैल्षियम, मैग्नीषियम, कार्बोनेट, नाइट्रोजन, फास्फोरस, ह्यूमस
- अन्य – गेहूँ, चना, दाल, सोयाबीन, गन्ना, सब्जी, मूंगफली
- विशेष – पानी की कमी से सूखी और सूखने पर दरार पड जाती है।

लाल दोमट मिट्टी

इस मिट्टी में लौह तत्व की अधिकता के कारण इसका रंग लाल होता है। यह मिट्टी आर्कियन और ग्रेनाइट की बनी है। ये कम आर्द्रता ग्राही होने के कारण जल अभाव में कठोर हो जाता है। अतः इस मिट्टी में खेती के लिए अधिक जल की आवष्यकता होती है।

- इस मिट्टी में खरीफ मौसम में खेती अच्छी होती है, परंतु रबी मौसम में सिंचाई की व्यवस्था होने पर अच्छी खेती की जा सकती है।
- प्रदेश के 10 से 15 प्रतिशत भाग में इसका विस्तार है।
- मुख्य रूप से प्रदेश में बस्तर, दंतेवाडा, सुकमा, बीजापुर में ये मिट्टी पायी जाती है।

मिट्टी का स्थानीय नाम

- लाल पीली मिट्टी – मटासी
- लैटेराइट – भाठा या मुरमी
- काली मिट्टी – कन्हार
- काली व लाल मिट्टी का मिश्रण – डोरसा
- बस्तर के पठार में पायी जाने वाली मिट्टी – टिकरा मरहान, माल, गाभर
- उत्तरी क्षेत्र में पायी जाने वाली – गोदगहबर, बहरा
- नदियों की घाटी में पायी जाने वाली मिट्टी – कछारी
- कन्हार और मटासी के बीच की मिट्टी – डोरसा

छत्तीसगढ की प्रमुख नदियाँ

परिचयः– छत्तीसगढ राज्य देष के मध्य–पूर्व में स्थित है। भौगोलिक संरचना के अनुसार छत्तीसगढ राज्य को मुख्यतः चार नदी कछारों में बाँटा जा सकता है। जिसमें प्रदेश की नदियाँ सम्मिलित है।

1. महानदी प्रवाह प्रणाली
2. गोदावरी प्रवाह प्रणाली
3. गंगा नदी प्रवाह प्रणाली
4. नर्मदा नदी प्रवाह प्रणाली

महानदी प्रवाह प्रणाली

महानदी तथा इसकी सहायक नदियाँ पूरे छत्तीसगढ का 58.48 प्रतिशत जल समेट लेती है। छत्तीसगढ की गंगा के नाम से प्रसिद्ध महानदी धमतरी के निकट सिहावा पहाडी से निकलकर दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हुई बिलासपुर जिले को पार कर पष्चिम से पूर्व की ओर बहती है, तथा उडीसा राज्य से होती हुई बंगाल की खाडी में गिरती है। महानदी की कुल लंबाई 851 किमी है, जिसका 286 किमी छत्तीसगढ में है। प्रदेश में इसका प्रवाह क्षेत्र धमतरी, महासमुन्द्र, दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, जांजगीर चांपा, रायगढ एवं जशपुर जिले में है।

महानदी की प्रमुख सहायक नदियाँ

शिवनाथ नदी

इस नदी का उद्गम स्थल राजनांद गाँव जिले की अंबागढ तहसील की 624 मीटर ऊँची पानाबरस पहाडी में है। यह नदी उद्गम स्थल से 40 किमी की दूर तक उत्तर की ओर बहकर जिले की पूर्व सीमा की ओर बहते हुए षिवरीनारायण के निकट महानदी में विलीन हो जाती है। षिवनाथ नदी राजनांद गाँव जिले में 384 वर्ग किमी तथा दुर्ग जिले में 22484 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है। हाफ, आगर, मनियारी, अरपा, लीलगर, खरखरा, खारून, जमुनिया आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

हसदों नदी

यह मनेंद्रगढ तहसील में कोरिया पहाडी के निकट रामगढ से निकलती है। इसकी कुल लंम्बाई 209किमी है। चांपा में बहती हुई षिवरीनारायण से 8 मील की दूरी में महानदी में मिल जाती है। इसमें कटघोरा से लगभग 10.12 किमी पर प्रदेश की सबसे ऊँची तथा बडी मिनीमाता हसदों बागों नाम की बहुउद्देशीय परियोजना का निर्माण किया गया है।

तांदूला नदी

यह शिवनाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ है जिसका जन्म स्थल कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर तहसील की पहाडी पर है।

खारून नदी

इस नदी की लंबाई 208किमी है। दुर्ग जिले के दक्षिण पूर्व से निकलकर 80 किमी उत्तर की ओर बहकर सिमगा के निकट सोमनाथ नामक स्थान पर षिवनाथ में मिल जाती है। यह नदी दुर्ग जिले में 19980 वर्ग किमी तथा रायपुर जिले में 2700 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है।

जोंक नदी

यह महासमुंद के पहाडी क्षेत्र से निकलकर रायपुर जिले के बिन्द्रानवागढ के निकट स्थित भाटीगढ पहाडी 493 मी. से निकलकर रायपुर जिले के दक्षिणी भाग में बहते हुए राजिम के निकट महानदी में मिलती है । रायपुर जिले में यह नदी 2480 वर्ग किमी. क्षेत्र का निर्माण करती है।

पैरी नदी
इस नदी की लंबाई 96 किमी है। रायपुर जिले में बिन्द्रानवागढ के निकट स्थित भाटीगढ पहाडी (493मी) से निकलकर रायपुर जिले के दक्षिणी भाग में बहते हुए राजिम के निकट महानदी में मिलती है। रायपुर जिले में यह नदी 3000 वर्ग किमी. का निर्माण करती है।

माण्ड नदी
यह नदी सरगुजा जिले की मैनपाट पठार के उत्तरी भाग में निकलती है। फिर रायगढ जिले के घरघोडा एवं रायगढ तहसील में बहती हुई जांजगीर – चांपा की पूर्वी भाग में स्थित चन्द्रपुर के निकट महानदी में मिल जाती है। कुरकुट और कोइराज इसकी सहायक नदियाँ है। इसका प्रवाह क्षेत्र वनाच्छित एवं बालुका प्रस्तरयुक्त है। रायगढ जिले में यह नदी 14 किमी की दूरी तय करती है जहाँ यह 3233वर्ग किमी तथा सरगुजा जिले में 800 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है।

ईब नदी
इसका उद्गम जषपुर जिले के पाण्डरापाट नामक स्थान पर खुरजा पहाडियों से हुआ है। छत्तीसगढ में इसकी कुल लंबाई 87किमी है। यह महानदी की प्रमुख सहायक नदी है। ढाल के अनुरूप उत्तर से दक्षिण की ओर जषपुर जिले में बहते हुए उडीसा राज्य में प्रवेष कर हीराकुंड नामक स्थान से 10 किमी पूर्व महानदी में मिलती है। मैना, डोंकी इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है। इसका अपवाह क्षेत्र सरगुजा के 250 वर्ग किमी तथा रायगढ जिले के 3546वर्ग किमी में है।

केलो नदी
इसका उद्गम रायगढ जिले की घरघोडा तहसील में स्थित लुडेग पहाडी में हुआ है। घरघोडा एवं रायगढ तहसीलों में उत्तर से दक्षिण की ओर बहते हुए उडीसा राज्य के महादेव पाली नामक स्थान पर महानदी में विलीन हो जाती है।

दूध नदी
इसका उद्गम कांकेर से लगभग 15 किमी की दूरी पर स्थित मलाजकुण्डम पहाडी से हुआ है जो पूर्व की ओर बहते हुए महानदी में मिलती है।

बोराई नदी
इस नदी का उद्गम स्थल कोरबा के पठार से हुआ है। यह नदी आगे उद्गम स्थल से दक्षिण दिषा में बहती हुई महानदी में विलीन हो जाती है। षिवनाथ प्रमुख सहायक नदी है।

गोदावरी प्रवाह प्रणाली
गोदावरी महाराष्ट्र प्रदेश के नासिक जिले के त्रयम्बक नामक 1067 मीटर ऊँचे स्थान से निकलकर छत्तीसगढ की दक्षिणी सीमा बनाती हुई बहती है। 'दक्षिण की गंगा' नाम से विख्यात यह नदी प्रदेश के बस्तर जिले 4240 वर्ग किमी तथा राजनांद गाँव जिले में 2558 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र बनाती है तथा लगभग 40 किमी लंबी दूरी में बहती है। इंद्रावती, शबरी, चिंता, कोटरी, बाघ, नारंगी, मरी, कोभरा, डंकनी और शंखनी आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

गोदावरी की प्रमुख सहायक नदियाँ
इंद्रावती नदी
यह गोदावरी की प्रधान सहायक तथा बस्तर जिले की सबसे बडी नदी है। इसका उद्गम उडीसा राज्य के कालाहांडी पठार से हुआ है। प्रदेश के बस्तर जिले में लगभग 370किमी की दूरी तय करते हुए पूर्व से पष्चिम दिषा में बहते हुए यह गोदावरी में विलीन हो जाती है। यह नदी जगदलपुर से लगभग 35 किमी दूर पष्चिम में चित्रकोट जल–प्रताप की रचना करती है।

कोटरी नदी
यह नदी दुर्ग जिले की उच्च भूमि से निकलकर कांकेर जिले में इंद्रावती नदी में मिल जाती है। इसका सर्वाधिक अपवाह क्षेत्र राजनांद गाँव जिले में है।

शबरी नदी
इसका उद्गम दंतेवाडा के निकट बैलाडीला पहाडी है जो बस्तर की दक्षिणी पूर्वी सीमा में बहती हुई आंध्र प्रदेश के कुनावरम् के निकट गोदवरी में मिल जाती है। बस्तर जिले में यह 150किमी लंबाई में बहती है। जिससे 5680 किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है।

डंकिनी और षंखिनी नदी
ये दोनों इंद्रावती की प्रमुख सहायक नदियाँ है। डंकिनी नदी का उद्गम डांगरी–डोंगरी तथा षंखिनी नदी का उद्गम बैलाडीला पहाडी से हुआ है। दंतेवाडा में ये दोनों नदियाँ आपस में मिल जाती है।

बाघ नदी
इस नदी का उद्गम राजवांद गाँव जिले में स्थित पठार से हुआ है। यह नदी छत्तीसगढ और महाराश्ट्र राज्यों के बीच की सीमा बनाती है।

नारंगी नदी
यह बस्तर जिले की कोंडागांव तहसील से निकलती है, तथा चित्रकूट प्रताप के निकट इंद्रावती में विलीन हो जाती है।

गंगा नदी प्रवाह प्रवाली
प्रदेश के लगभग 15% गंगा अपवाह तंत्र का विस्तार है। इस प्रवाह क्षेत्र के अंतर्गत बिलासपुर जिले के 5:भाग रायगढ जिले का 14% भाग तथासरगुजा जिले का 8% भाग आता है। प्रदेश में सोन इसकी प्रमुख नदी है जो पेन्ड्रा रोड तहसील के बंजारी पहाडी क्षेत्र से निकलकर पूर्व से पष्चिम की ओर बहती है और मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश को पार करते हुई गंगा नदी में मिल जाती है। कन्हार, रिहन्द, गोपद, बनास, बीजाल इसकी अन्य सहायक नदियाँ है।

प्रमुख सहायक नदियाँ
कन्हार नदी
यही नदी बिलासपुर जिले के उत्तरी पष्चिमी भाग में स्थित खुडिया पठार के बखोना नाम पहाडी से निकली है। इसका उद्गम स्थल 1012 मीटर ऊँचा है। यहाँ से उत्तर की ओर बहती हुई सामरी तहसील में 60 मीटर ऊँचे कोहरी जलप्रपात की रचना करती है। इसके पष्चात् षहडोल एवं सतना जिले की सीमा पर सोन नदी में मिल जाती है। यह नदी सरगुजा जिले में 3030वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है। सिंदूर गलफूजा, दातरम, पेंगन आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

रिहन्द नदी
यह नदी सरगुजा जिले के मैनपाठ के निकट 1088 मीटर ऊँची मातरिंगा पहाडी से निकलती है। अपनी उद्गम स्थल से उत्तर की ओर बहती हुई यह सरगुजा बेसीन की रचना करती है। इसी कारण उसे सरगुजा जिले की जीवन रेखा कहा जाता है। यह अपवाह क्रम की सबसे बडी (145 किमी) नदी है। इस पर मिर्जापुर क्षेत्र में रिहन्द नामक बांध बनाया गया है। रिहन्द बेसिन में बहने के पष्चात् अन्ततः उत्तरप्रदेश में सोन नदी में विलीन हो जाती है। घुनघुटा, मोरनी, महान, सूर्या, गोबरी आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

नर्मदा नदी प्रणाली

नर्मदा नदी प्रणाली कबीरधाम से बहने वाली बंजर, टांडा एवं उसकी सहायक नदियाँ नर्मदा प्रवाह प्रणाली के अंतर्गत है। छत्तीसगढ में नर्मदा प्रवाह तंत्र की नदियों का प्रवाह क्षेत्र 710 वर्ग मीटर के क्षेत्र में है। मैकाल श्रेणी महानदी प्रवाह क्रम को नर्मदा क्रम से अलग करती है। राजनांद गाँव जिले की पष्चिमी सीमा पर भूमि का ढाल उत्तर–पष्चिम की ओर बहती है। ये नदियाँ भी छोटी है तथा ग्रीश्मकाल में सूख जाती है ।

छत्तीसगढ में वन सम्पदा

छत्तीसगढ में वन की स्थिति

- कुल क्षेत्रफल –59772 वर्ग किमी
- कुल प्रतिशत –44.2%
- देष के कुल वन का प्रतिशत –12%
- कुल राजस्व वन ग्राम – 425

भारत में वन

- भारत में वनों का क्षेत्रफल –697898 वर्ग किमी
- वनों का प्रतिशत –21.23%

सर्वाधिक वन वाला राज्य

- मध्यप्रदेश –77522 वर्ग किमी
- अरूणाचल प्रदेश –67321 वर्ग किमी
- छत्तीसगढ–59722 वर्ग किमी
- छत्तीसगढ का भारत में तृतीय स्थान है।
- भारत के वन का 7.07 प्रतिशत है।

वनों का वर्गीकरण

छत्तीसगढ के वनों का वर्गीकरण तीन आधार पर किया गया है।

- प्रशासन /प्रबंधन के आधार पर
- प्राकृतिक / भौगोलिक वर्गीकरण
- प्रजातीय वर्गीकरण

प्रशासन के आधार पर

इस आधार पर वनों को तीन भागों में बाँटा गया है।

1. **आरक्षित वनः – (रिजर्व)**
    - प्रतिशत –43.13%
    - क्षेत्रफल –25780 वर्ग किमी
    - सर्वाधिक आरक्षित वन वाला जिला – दंतेवाडा
    - न्यूनतम आरक्षित वन वाला जिला – कोरबा

2. **संरक्षित वन (कंजर्वेटिव)**
    - प्रतिशत –40ण्21:
    - क्षेत्रफल –24036वर्ग किमी
    - सर्वाधिक आरक्षित वन वाला जिला –सरगुजा
    - न्यूनतम आरक्षित वन वाला जिला –जांजगीचांपा

3. अवर्गीकृत वन /खुला वन

- प्रतिशत –16.65:
- क्षेत्रफल –9994वर्ग किमी
- सर्वाधिक अवर्गीकृत वन वाला जिला –कांकेर
- न्यूनतम अवर्गीकृत वन वाला जिला –निरंक

प्राकृतिक/भौगोलिक वर्गीकरण

1. ऊष्णकटिबंधी अद्रपर्णपाती वन –47.89%
2. ऊष्णकटिबंधी शुष्क पर्णपाती वन –51.65%
3. रोपण या बाह्म वृक्ष –0.46%

प्रजातीय के आधार पर

1. साल वन (शोरिया रोबॉटा)

- प्रतिशत –40.56%
- क्षेत्रफल –24244.878 वर्ग किमी
- यह राजकीय वृक्ष है।
- बस्तर को साल वनों का द्वीप कहा जाता है।
- सर्वोत्तम किस्म की साल वृक्ष केषकाल घाटी (कोंडागाँव) में पाये जाते है।

2. सागौन वन (टेक्टना ग्रान्डीश)

- प्रतिशत –9.42%
- क्षेत्रफल –5633.131वर्ग किमी
- सर्वोत्तम किस्म का सागौन वन कुरषेल की घाटी (नारायणपुर) में पाये जाते है।

3. मिश्रित वन (टेक्टना ग्रान्डीश)

- प्रतिशत –43.52%
- क्षेत्रफल –26018.380 वर्ग किमी

4. बांस

- प्रतिशत –6ण09:
- विविध जानकारी – सर्वाधिक वन क्षेत्रफल (प्रतिशत) वाला जिला – नारायणपुर
- न्यूनतम वन क्षेत्रफल (प्रतिशत) वाला जिला – जांजगीरचांपा
- सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला बीजापुर
- न्यूनतम वन क्षेत्रफल वाला जिला – जांजगीरचांपा

छत्तीसगढ राज्य की वन नीति

स्थापना–2001

उद्देश्य–

1. संरक्षण संवर्धन
2. हर्बल स्टेट
3. आर्थिक उपयोग और पारिस्थितिक संतुलन
4. अपराध ब्यूरो
5. विषेश न्यायालय

हर्बल स्टेट

उद्देश्य–

1. लघु वनोपज को बढाना (बांस, इमली,तेन्दू आदि)
2. औषधि पौधे को बढाना

छत्तीसगढ में वन संसाधन

वन संसाधन की अवधारणा और आँकडों को समझने से पहले हमे इस विशय से संबंधित कुछ षब्दावली को समझना जरूरी है जोकि निम्न में दिया गया है।

1. **अभिलेखित वन** – शासकीय रिकॉर्ड में दर्ज वनभूमि को अभिलेखित वन कहा जाता है। इसमें वर्तमान के वनआवरण के बजाय पूर्व के आंकडों (भूमि) को सम्मलित किया जाता है। यह वह भूमि होती है जोकि वन विभाग के अधीन होती है। इसमें होने वाला बदलाव राज्य शासन की वर्तमान परियोजनाओं के कारण हुए अधिग्रहण, वन क्षेत्र का राजस्व क्षेत्र परिवर्तन आदि के कारण होता है।

2. **वनावरण**
   भारतीय वन सर्वेक्षण के सैटेलाइट द्वारा किये गये सर्वेक्षण से प्राप्त वन क्षेत्र जो किसी निष्चित भू–भाग में वन सघनता को दर्षाते है उसे वनावरण कहते है। इन्हें तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है।
   - सघन वन
   - मध्यम सघन वन
   - खुले वन

   वनस्पति प्रकार के आधार
   - ऊष्ण कटिबंधीय षुश्क पर्णपातीय वन – 51.65%
   - ऊष्ण कटिबंधीय आर्द्र पर्णपातीय वन – 47.89%
   - रोपण या बाह्म वन वृक्ष – 0.46%

3. **वृक्षारोपण** – वह क्षेत्र, जहाँ 1हेक्टेयर भूमि में 10: से अधिक सघनता पर वृक्षारोपण किया जाता है उसे वृक्षावरण कहते है। यह आंकडा ष्थैरिपोर्ट के अनुसार है।

4- CAMP – Compensatory Afforestation fund Management and planning Authority

इसकी स्थापना जुलाई 2009 में की गई थी जिसका उद्देष्य ऐसी वन भूमि जो गैर वन उपयोग के लिए परिवर्तित कर दी गई है, की प्रतिपूर्ति के लिए वनीकरण और उत्थान गतिविधियों को बढावा देना है। इसके तहत रेलमार्ग, सडक, खनिज और औद्योगिक क्रियाकलाप के लिए अधिग्रहित वन भूमि और वनों की क्षतिपूर्ति राषि का प्रबंधन किया जाता है।

5. **संयुक्त वन प्रबंधन–** वन नीति 1988के तहत राज्य में संयुक्त वन प्रबंधन के माध्यम से बिगडे वनों का सुधार तथा सहायक पुनरूत्पादक कार्यक्रम चलाये जा रहे है, इसके तहत वनों की सुरक्षा में जन भागीदारी के लिए समितियों के माध्यम से वन प्रबंधन एवं संरक्षण का कार्य किया जाता है।

वन विभाग प्रषासनिक इकाई

वन वृत्त (सर्किल)
↓
वन मण्डल (डिवीजन)
↓
उप–वन मण्डल (सब–डिवीजन)
↓
वन परिक्षेत्र (रेंज)
↓
परिक्षेत्र वृत्त
↓
बीट

वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2019 के अनुसार वनों के नवीनतम तथ्य

राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 44.21% वन आच्छादित है जिसका कुल क्षेत्रफल 59 हजार 772 वर्ग कि. मी. है। देष के कुल वन क्षेत्रफल का लगभग 7.46% छत्तीसगढ में है। क्षेत्रफल की दृश्टि से मध्यप्रदेश (77,462 वर्ग किमी), अरूणाचल प्रदेश (67,248 वर्ग किमी), छत्तीसगढ (55,586 वर्ग किमी) तीसरा स्थान रखता है।

वन सर्वेक्षण सर्वे रिपोर्ट 2019 के अनुसार छत्तीसगढ में वन एवं वृक्ष आवरण

- राज्य में अभिलेखित वन ;त्थ।द्ध का क्षेत्रफल –59,772 वर्ग किमी
- राज्य में वनावरण का क्षेत्रफल –55610 वर्ग किमी
- राज्य में वृक्ष आवरण क्षेत्रफल –4,248 वर्ग किमी
- प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत (RFA)–44.21%
- प्रति व्यक्ति वन और वृक्षावरण –0.232 हैक्टेयर
- देष में कुल वन और वृक्ष आवरण का प्रतिशत –7.46%

वन क्षेत्रफल एवं प्रतिशत– (आयुक्त भू–अभिलेख के अनुसार)

- सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला – नारायणपुर
- न्यूनतम वन क्षेत्रफल वाला जिला – बेमेतरा एवं दुर्ग
- सर्वाधिक वन प्रतिशत वाला जिला – नारायणपुर 92%
- न्यूनतम वन प्रतिशत वाला जिला – बेमेतरा एवं दुर्ग 0%

राज्य के वनों में वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है –

- आरक्षित वन (25,782 वर्ग किमी) – 43.14%
- संरक्षित वन (24,036 वर्ग किमी) – 40.21%
- अवगीकृत वन (9,954 वर्ग किमी) – 16.65%

राज्य के वनों में वर्गीकरण प्रमुख वृक्षों के आधार पर –

- साल वन (24,244 वर्ग किमी) – 40.56%
- सागौन वन (5,633 वर्ग किमी) – 9.42%
- मिश्रित वन (26,108 वर्ग किमी) – 43.52%
- कार्य आयोग्य (3,876 वर्ग किमी) – 8.50%

छत्तीसगढ में पाए जाने वाले कुछ मुख्य वनोपज

छत्तीसगढ में बांस वन

- प्रदेश में अनुपात से प्राप्त कुल आय में बांस का योगदान कुल 20% है। राज्य में बांस की 80 प्रजातियाँ प्राप्त होने का अनुमान है जिसमें बैनेट और गौर के सर्वे के अनुसार 9 प्रजातियों की पुश्टि हुई है जिसमें मुख्यतः दो प्रकार की बांस की प्रजातियाँ (डांडरी और कंटगा) यहाँ पाई जाती है।
- राज्य में एषिया का सबसे बडा बेम्बू म्यूजियम धमतरी में स्थापित किया जा रहा है।
- लामनी पार्क जगदलपुर में जैव–विविधिता की पुश्टि से बांस की 100 से अधिक प्रजातियां को संरक्षित किया गया है।
- बांस विपणन केन्द्र रायपुर में वर्ष 2010 में स्थापित किया गया ।
- छत्तीसगढ में बांस वन का कुल क्षेत्रफल 6556 वर्ग किमी है ।
- छत्तीसगढ के कुल वन क्षेत्र में बांस वन क्षेत्रफल –11%
- छत्तीसगढ में प्रमुख बांस प्रसंस्करण केन्द्र – चारामा (कांकेर), बांदे, भानुप्रतापपुर (कांकेर), आमगांव (सरगुजा), कामोनी (दंतेवाडा), नोनीबिर्रा (कोरबा), लालपुर (कवर्धा)
- प्रमुख बांस प्रषिक्षण केन्द्र – दानीकुण्डी, मरवाही (बिलासपुर), निमोरा (रायपुर), खरसिया (रायगढ), सरगुजा, कटघोरा (कोरबा)

छत्तीसगढ में तेंदूपत्ता

- देष में सर्वाधिक तेंदूपत्ता छत्तीसगढ में उत्पादित होता है, जो लगभग 17 प्रतिशत है।
- तेंदूपत्ते से बीडी बनाने का सबसे बडा कारखाना बिलासपुर में स्थापित है, जबकि घरेलू कुटीर उद्योग के रूप में राजनांद गाँव जिले प्रसिद्ध है।
- शहीद महेन्द्र कर्मा तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना में तेंदूपत्ता संग्रहण कार्य में लगे पंजीकृत संग्राहक परिवार के मुखिया 50 र्व्ष उत्तराधिकारी को 2 लाख रूपए की अनुदान सहायता राशि प्रदान की जाएगी। दुर्घटना से मृत्यु होने पर दो लाख रूपये अतिरिक्त प्रदान किया जाएगा। दुर्घटना में पूर्व विकलांगता की स्थिति में एक लाख की सहायता अनुदान राशि दी जाएगी।

छत्तीसगढ में लाख उत्पादन

- लाख एक प्राकृतिक स्त्राव है, जो नन्हें–नन्हें लाख कीटों द्वारा सुरक्षा हेतु अपने शरीर में उपस्थित सूक्ष्म ग्रंथियों द्वारा रेजिन्म स्त्राव के फलस्वरूप प्राप्त होता है।
- लाख उत्पादन के लिए केरिया लक्का नामक कीडे को डाक, बेर, कुसुम, अर्जुन, पलास, आदि पेडों पर इसकी खेती (पालन) की जाती है।
- छत्तीसगढ राज्य की एक तिहाई आबादी वनों पर आधारित आजीविका प्राप्त करती है।
- राज्य के धमतरी में लाख अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई है।
- वहीं कांकेर जिले में लाख संग्रहण से लगे हुए लोगों को प्रषिक्षण देने के लिए संस्थान स्थापित किया गया है।
- वर्तमान में लाख संग्रहण में राज्य का प्रथम स्थान और झारखण्ड द्वितीय स्थान में है।